ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

महिला लेखन और स्त्री विमर्श

सीमा दोहरे
शोधार्थिनी,
हिन्दी विभाग,
विजयाराजे शा.कन्या
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मुरार, ग्वालियर म. प्र.

सारांश

'स्त्री विमर्श' अपने तकीनीकी अर्थ मे उत्तर आधुनिक वैचारिक परिदृश्य का एक आयाम है! उत्तर आधुनिकता की केन्द्रीयकरण की वैचारिक आधारभूमि को तोड़कर उसे विकन्द्रीकृत करने की विचारभूमि प्रस्तुत की। इस विकन्द्रीकृत ने हाशिये पर डाल दिए गए लोगो और उनकी पहचान को केंद्र मे उपस्थित करने का कार्य किया। इस स्थिति में साहित्य और समाज में स्त्री विमर्श की संकल्पना का उदभव माना जा सकता है।

मुख्य शब्द : Please add some keywords

प्रस्तावना

स्त्री जो सदियों से मुख्यधारा से बाहर डाल दी गई थी और जिसकी अपनी पहचान और स्वतंत्र अस्तित्व नहीं माना जाता था। इन बदली हुई परस्थितियो में केंद्र में आने लगी और उसने पुरुष की तरह अपनी पहचान और स्वतंत्र अस्तित्व को प्रतिष्ठित करने का संघर्ष आरम्भ किया यह संघर्ष ही स्त्री विमर्श के नाम से जाना जाने लगा है। स्त्री की मुक्ति के इस विशिष्ट संघर्ष के उभरने से जो स्त्रिया इसमें अपनी रचनात्मक और संघर्षशील भूमिका के साथ उतरी उन्होंने समाज में स्त्रिया की वास्तिविक स्थिति को रेखांकित करना आरम्भ किया। इस प्रयास में उन्होंने उन स्त्रियो के वैचारिक और संघर्षशील प्रयाशों की भी खोजा जिन्होंने इतिहास में इस दिशा में किसी भी तरह के कार्य किये थे।

इन प्रयासों को खोजना माना जाना चाहिए । पश्चिम में नवजागरण के दौरान बहुत सी ऐसी स्त्रियां हुई जिन्होंने स्वयं की स्वतंत्र पहचान के लिए संघर्ष किया, उन्होंने अपना असिमताबोध अनुभव किया और समाज में उसे अन्य स्त्रियो के सन्दर्भ में परिभाषित भी किया।

इन स्त्रियो के प्रयासों में हम सबसे पहली मेरी बोल्सटनक्राफ्ट का नाम सबसे पहले पाते है। साठोत्तरी दशक के बाद संपूर्ण दुनियां में स्त्रीवाद का चर्चा हुआ । किन्तु आज भी स्त्रीवाद की ओर देखने का हमारा नजरिया अलग है । स्त्रीवाद का अर्थ परिवारवादी विचारधारा को आह्वान देने वाला पुरूष विरोधी स्वर इसी रूप में आज भी बहुसंख्य लोग देते हैं स्त्रीवाद को मान्यता देने वाली अनेक महिलायें सार्वजनिक तौर पर इसी अवधारणा को फैलाती रही, जिससे नारी विमर्श के संदर्भ में कई गलतफहमियां निर्माण हुई । स्त्रीवाद आखिर क्या है ? केवल पुरूष विरोधी स्वर के रूप में आज इसे मान्यता है । यह ऐसी बात नही है ।

वास्तव में स्त्रीवाद अथवा नारी विमर्श पर विचार करते हुये सर्वप्रथम एक बात का स्पष्ट होना निहायत जरूरी है वर्तमान परिपेक्ष्य में पुरूष जाति की सत्ता कायम है और उससे निर्माण होने वाला भेद नारी को कही का नही छोडता हमें लगता है, इन बातो को मद्देनजर रखकर इसका विवेचन विस्तार तथा स्पष्टीकरण देना जरूरी है ।

नारीवाद के कारण समाज व्यवस्थ केवल आक्रांत ही नही बल्कि आतंकित भी हो रही है और इसके फलस्वरूप नारी पर अनेक बंधन डालकर उसे कैद करने की साजिश हो रही है समाज व्यवस्था को यह बात कदापि भी सहन नहीं हो पाती कि अपनी दायरा एवं चौखट को तोडने वाली इस नारी का क्या किया जाए ? उसे आंतकित करने के लिए समाज में कोशिशें बदस्तुत जारी हैं । इसलिए अव हम इस नतीजे पर आ पहुँचे है कि नारी को पुरूष से मुक्ति नही पुरूषी मानसिकता से मुक्त होना है ।

स्त्री विमर्श का साधारण अर्थ है स्त्री को केन्द्र में रखकर उससे संबंधित मनोभाव, समस्यायें ,पीडायें अभिव्यक्ति के संबध में चिंतन करना ताकि उसे भी वही स्थान मिल सके। जिसकी वह अधिकारी है । जो कि उसे कभी नही मिला । एक लंबे समय से चली आ रही शोषणकारी व्यवस्था ने स्त्री को पुरूष से कमजोर उस पर आश्रित, उसकी इच्छाओं की पूर्ति का सामान, उससे

हीनतर मानने , समझने के लिए मजबूर कर दिया जिस कारण वह चिंतन विचार विमर्श और भावनात्मक समानता और समान अधिकार का विषय ही नहीं रह गई थी । उस स्त्री के बारे में बात करने की किसी को फिक्र नहीं, जिसकी वजह से यह समस्त संसार धर्म और ईश्वर की अवधारणायें , रीति– रिवाज , और सम्पूर्ण शक्तिशाली पुरूष समाज अपना अस्तित्व बनाये रखे है। जिसने अपने प्रधानता को गौण करके पुरूष को प्राथमिक बनने का अवसर दिया है उसी के भाव संसार से अनभिज्ञ पुरूष प्रधान समाज उसके कष्ट के बारे में बात नही करता । उसी स्त्री देह और मान के अनुछुए पहलू एहसास पीडाओं, अभिव्यक्तियों को स्वर देने के लिए चिंतन करना स्त्री विमर्श कहलाता है।

स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्रीवादी विमर्श का स्वर प्रस्फुटित होता हुआ दिखाई दे रहा है आज केवल स्त्री विमर्श की चर्चा नहीं हो रही है, अपितु दलित विमर्श और दलित स्त्री विमर्श की भी हो रही है। नारीवाद में नारी की नियति उसकी समस्याओं तथा अस्तित्व की तलाश को समाजवादियों ने चर्चा का विषय बनाया है । वैसे भी नारीवादी विमर्श पितृसत्तात्मक के हिंसक व्यवहार प्रहर, दुर्व्यवहार एवं शोषण करने वाली मानसिकता पर विचार करता है।[2]

स्त्री पुरूष का मौलिक अंतर शताब्दियों से चली आ रही अवधारण का ही सूत्रात्मक निष्कर्ष है कि, पुरूष में स्त्री के गुण आ जाते तो वह महात्मा बन जाता है । स्त्री में पुरूष के गुण आ जाते है तो वह कुलटा बन जाती है सिमाने दि बुआ ने अपनी पुस्तक 'द सेकण्ड सेक्स' में इस अवधारणा का खण्डन किया है । उनकी स्थापना की मान्यता है कि बचपन से लेकर युवावस्था तक उसे जिन स्थितियों में रखा जाता है जो शिक्षा दीक्षा दी जाती है उसके कारण स्त्री पुरूष से भिन्न जाती है स्त्री और पुरूष के जिन भिन्न और परस्पर विरोधी गुणो की बात की जाती हैं, वे मौलिक या प्राकृतिक गुण नहीं है, अपितु मानव सभ्यता की देन है।[3]

स्त्रियों पर जो चर्चा हुई वह पुरूषों ने की चाहे वह सामाजिक सरोकारों के मद्देनजर हो या सहानुभूति से । स्त्री चरित्रों को लेकर पुरूष रचनाकारों का एक अपना नजरिया और अपना आंकलन था। प्रेमचन्द, अज्ञेय, जैनेन्द्र ने बेहद जीवंत स्त्री पात्र अपने उपन्यासों, कहानियों में रचे। महात्मागांधी ज्योतिबा फुले, राममनोहर लोहिया, बाबा अम्बेडकर के स्त्री संबंधी सरोकारों से सभी परिचित है ं पर यह स्थिति पिछले दो दशकों से विश्व के हर क्षेत्र में देखी जा रही है कि, स्त्रियां अपने बारे में स्वयं अपने को विषय बनाकर चर्चा कर रही हैं। अपनी समस्याओं से जुडे विषय अपनी तरह से उठा रही हैं ।

मेहरूनिसा परवेज का 'कोरजा'जिसमें आदिवासी परिप्रेक्ष्य में एक स्त्री की त्रासदी का वर्णन है सूर्यवाला का मेरेसंधिपत्र मंजुल भगत का अनारों 'गंजी' जिसमें पहली बार एक कामकाजी नौकरानी के रोजी– रोटी के संघर्ष के साथ –साथ उसकी ताकत और स्वाभिमान को रेखांकित किया गया है कमल कुमार का ' यह खबर' नहीं जिसमें सत्ता और प्रभुत्वशाली वर्ग के बीच किस तरह एक प्रतिभाशाली लडकी की अस्मिता को कुचला जाता है । इसका यथार्थ वर्णन है ।

ममता कालिया के उपन्यास ' बेघर ' और एक पत्नि के नोटस' में एक मध्यमवर्गीय पढी लिखी महिला को भी अपने पति द्वारा एक सामान्य औरत की तरह व्यवहार करना गाहे बगाहे व्यंग्य का शिकार होना तथाकथित प्रगतिशील और पढे लिखे वर्ग का बेनकाब करता है ।

मृदुला का अनित्य जिसमें दो महत्वपूर्ण स्त्री पात्रों में से एक काजल एक फेमिनिष्ट प्राध्यापक की तरह उभरती है, जो अनलिखे इतिहास को दुबारा लिखाना चाहती है। मृणाल पांडे का पतंरग पुराण जिसे पढकर लगता है कि पूरा एक शहर ऐसी औरतों के नजरिये से देखा– परखा और बयान किया जा रहा है जो अपने घूघंट उल्टाकर और अपने खिडकी –झरोखे खोलकर बडी पैनी निगाह से कस्बे में होने वाली हर क्रियाकलाप का जायजा ले रही है।

मैत्रेयी पुष्पा का बहुचर्चित उपन्यास 'इदन्नमम' तथा 'चाक' मधु कांकरिया का 'सलाम आखिरी' और 'सेज पर संस्कृत' जिसमें जैन साध्वियों का धर्म के नाम पर शोषण दबा – छिपाकर रखा जाता है ।

प्रसिद्व कथाकार मन्नू भंडारी लिखती है ''स्त्री की मुक्ति है। उसकी शिक्षा में। साथ ही बाहर की दुनियां भी देखें। दुनियां का अर्थ यह नही कि बाहर के देशों में घूमने जाऐं पर एक संकुचित दायरे से बाहर निकलकर देखें । इसके अतिरिक्त स्त्री स्वयं अपनी स्थिती के प्रति जागरूक हो। जब उसके अंदर यह भावना आएगी कि उसका शोषण हो रहा तभी उसकी स्थिति में सुधार आएगा ।

गांवों में तो आज भी स्त्रियां अपने शोषण को अपना कर्तव्य मानती हैं । ये जो गहरे संस्कार हमारे भीतर अपनी स्थिति को लेकर भर दिए गये हैं। जब स्त्री उनके मुक्त होगी तभी पुरूष के वर्चस्व से मुक्त होगी और परिवार तथा समाज में उसे उचित स्थान मिलेगा।[4]

कथा– साहित्य में भी स्त्री चेतना ने अपनी उपस्थिति पूरी गहराई और शिक्षत से दर्ज करवाई पर हिन्दी साहित्य में तथाकथित स्त्री विमर्श और विचार इतने बौद्विक स्तर पर है कि आम औरतों तक या उन औरतों तक जिन्हें सचमुच जागरूक बनाने की जरूरत है, यह पहुंच ही नहीं पाता है। यह काम साहित्य के स्त्री विमर्शकारों से कही अधिक महिला संगठन और जमीनी तौर पर उनसे जुड़ी कार्यकर्ता कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विचारधारा और समाजशास्त्रीय सिंद्वात का विकास ग्रंथ शिल्पी ।
2. डॉ. मधु संधु संवेद, जनवरी– फरवरी 2003 पृ. 43
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास,डॉ. नगेन्द्र यह संपादक , डॉ. हरदयाल 40वां संस्करण , वर्ष 2012 मयूर पेपर बैग्स पृ. 434
4. आजकल कल्पना शर्मा को दिया गया साक्षात्कार , मार्च 2008 , सपांदक सीमा ओझा पृ. 16